6-6-12 ओम् शान्ति मधुबन

मीठी जगदम्बा सरस्वती माँ की विशेषतायें (दादी जानकी जी के शब्दों में)

(मातेश्वरी जी की यह विशेषतायें मम्मा के स्मृति दिवस पर क्लास में सुना सकते हैं)

1- बाबा जो कहता है उसे जीवन में कैसे लायें, वह मम्मा ने प्रैक्टिकल करके सिखाया। बाबा जैसी सेवा चाहता है दादियों ने भी ऐसे किया है। हमारे पूर्वजों ने कभी यह नहीं कहा कि हमें याद में रहने के लिये टाइम नहीं है, तो इन्होंने सेवा करते कभी यह नहीं कहा कि सेवा बहुत है। मैंने भी ऐसे पूर्वजों का लाभ पूरा उठाने की कोशिश की है। आप भी अपने पूर्वजों को फालो करते चलो।

2- मम्मा ने कभी कोई भूल नहीं की, मम्मा सदा कहती कि अगर कोई भूल एक बार हो भी जाए तो दुबारा उसे रिपीट नहीं करना। मम्मा जगदम्बा तभी बनी, जब एकदम एक बाबा की याद में रही। जो बाबा के हैं, बाबा से सुन रहे हैं, कांध हिला रहे हैं। कबूतर की तरह हूं हूं कर रहे हैं, बाबा उन्हें याद है ही।

3- बाबा मम्मा को बाजू में बिठाता था, मम्मा सारा टाइम बाबा को ही देखती थी। सामने हमको कभी नहीं देखती थी। एक बार मम्मा से पूछा, मम्मा आज जो बाबा ने मुरली चलाई, आपका क्या विचार है? मम्मा ने ऐसी आंख दिखाई, यह कोई क्वेश्चन है क्या! बाबा की मुरली में अपने विचार कहाँ से आये? इतना हमारी बुद्धि स्वच्छ हो, सतोगुणी हो तब सतोप्रधान बनेंगे।

4- कहते हैं वन वन की काठी, (अलग-अलग जंगल की लकड़ी) यानि कोई कहाँ की, कोई कहाँ की बहनें सब आकरके इकट्ठे साथ में रहते थे, कभी किसी का अवगुण देखना, वर्णन करना यह अक्ल ही नहीं था। मम्मा बाबा ने पानी पीना भी सिखाया, खाना कैसे खाना होता है वो भी सिखाया, मम्मा हमारे साथ बैठके खाना खाती थी। भोजन के समय मम्मा को कभी बात करता हुआ नहीं देखा। तो अभी प्रैक्टिकल ऐसा जो करेंगे उन्हें देख और करेंगे।

5- कभी भी समझो मैंने कोई भूल की, मम्मा को सुनाई, कभी मम्मा ने किसी को सुनाई होगी? नेवर (कभी नहीं) इसलिए सबका बहुत फेथ था। ऐसे शुद्ध धारणा वाले हृदय में बाबा के महावाक्य अन्दर से काम करते हैं। तो एक होता है मुरली मुख से रिपीट करना वह तो सहज है इसमें सब बहुत होशियार हैं। दूसरा मन में अन्दर रिवाइज करना फिर है रियलाइज करना, फर्क है ना, मम्मा इसमें नम्बरवन थी।

6- मम्मा को सदा त्याग, तपस्या वाली लाइफ में देखा। कभी भी कोई चीज़ के लिए वा कोई व्यक्ति के लिए यह नहीं कहा होगा कि यह अच्छा है, यह नहीं अच्छा है। जैसे मम्मा सदा मुस्कराती रहती थी ऐसे सदा मुस्कराते रहो तो सारी दुनिया को हमारे मुस्कराते हुए चेहरे का साक्षात्कार होगा।

7- भले और सेवा कुछ भी नहीं करो, सिर्फ आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार, फरमानबरदार होकर रहो। नम्बरवन में आना हो तो अपने से पूछो कि मैं मम्मा समान आज्ञाकारी, वफादार हूँ? एक बाबा के सिवाए दूसरा कुछ याद न आये।

8- मम्मा हमेशा कहती थी बच्चे शिक्षा कभी खराब नहीं होती। शिक्षा सदा सम्भालकर रखनी चाहिए। मम्मा, मम्मा तभी बनी जो बाबा ने कहा वह मम्मा ने किया। मम्मा कहती थी सदा ही समझो जहान मुझे देख रहा है। ज्ञान के हिसाब से तो बाबा सदा हमको देख रहा है, तो अपने ऊपर कितना अटेन्शन रखना पड़ेगा। मेरा तो भक्ति में भी संस्कार था कि भगवान मुझे देख रहा है। अभी भी यही याद रहता कि हर घड़ी मैं बाबा को देख रही हूँ, बाबा मुझे देख रहा है, साथ-साथ पूरा जहान भी मुझे देख रहा है...।

9- हमारे मम्मा, बाबा और पूर्वजों की कृपा से सुख घनेरे की शिक्षायें प्राप्त हुई हैं, हम भी अगर उन जैसा पुरुषार्थ कर उनके समान बन जायें तो और क्या चाहिए! जैसे मम्मा बाबा के बाजू में बैठती थी और सदा बाबा को ही देखती थी, तब तो नारायण की लक्ष्मी बनी है। यहाँ कहते हैं ब्रह्मा सरस्वती, सतयुग में कहते हैं लक्ष्मी नारायण। ऐसे नहीं कहेंगे सरस्वती ब्रह्मा, ब्रह्मा की बेटी सरस्वती। लेकिन सरस्वती ऐसी बन गई जो नारायण की लक्ष्मी बन गई।

10- हमारे सामने बाबा मम्मा बैठे हैं उनके दर्पण में अपने को देखो। खुद दर्पण बन जाओ। मम्मा बाबा को दर्पण में देखो, देखते देखते सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। मम्मा भले कम बोलती थी, लेकिन मम्मा इतना प्यार से समझाती थी, जो मम्मा की समझानी हमारी बुद्धि को साफ करने वाली थी। मम्मा इतना साफ स्पष्ट शब्दों में सुनाती थी जो कोई भी रियलाइज कर ले कि हम पापी हैं, हमें पावन बनाने के लिए भगवान ने यह यज्ञ रचा है।

11- स्वयं भगवान अपने दिल का आवाज़ सुना रहा है उसे ऐसा ध्यान से सुनो जो मम्मा समान जीवन में परिवर्तन आ जाये। एकदम ऐसे मरो जो न देह, न सम्बन्धी, न दुनिया जैसे हमारे मम्मा बाबा। उन्होंने कभी नहीं कहा कि ये मेरा विचार है क्योंकि कौन सुना रहा है, क्या सुना रहा है, उसके आगे हमारा विचार कहाँ से आया?

12- बाबा बार-बार कहते बच्चे देही-अभिमानी स्थिति बनाओ। मम्मा की स्थिति कैसी रही? मम्मा नियमों पर पक्की रही। मम्मा बाबा का प्यार लेना हो तो उनके लिए पूरा रिगार्ड हो। जब रिगार्ड है तो उनकी आज्ञा सिरमाथे पर है। बाबा के महावाक्यों को दिल में धारण किया है तब गायन योग्य बने हैं।

13- मैं ऐसा मणका बनूँ, जो ईश्वरीय स्नेह की माला में पिरो जाऊं। माला का मणका बनने के लिए पहले ऐसे क्वालिटी बनें। सिर्फ ईश्वरीय स्नेह हो तो माला के अन्दर पिरो जायेंगे। बाबा भी ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न यादप्यार देते हैं, अगर मेरे अन्दर ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न याद होगी तो मेरी सूरत मूरत प्रेम स्वरूप होगी, कभी सीरियस नहीं बनेंगे। मम्मा कभी हंसने बहलने में टाइम नहीं गंवाती थी।

14- मम्मा के इशारे से ही हम सभी में परिवर्तन आया है। मम्मा ने मुख से कभी 10 शब्द भी नहीं बोले होंगे, बहुत पूछने से 2 शब्दों में बता देती थी ताकि ईश्वरीय बोल को अच्छी तरह से धारण कर सकें। तो माँ हमारी धरनी को ऐसे तैयार करती थी, जरा भी देह-अभिमान है तो मम्मा के सामने नहीं आ सकते। मम्मा में ऐसी आकर्षण थी जो हर आत्मा को आकर्षित करती थी।

15- बाबा ने यज्ञ रचा, ब्राह्मणों को एडाप्ट किया, मम्मा ने यज्ञ के नियमों पर चलना सिखाया। हम ब्राह्मणों को अच्छी तरह पालना दी जो अभी तक भी यज्ञ में चल रहे हैं। मम्मा कुमारी से यज्ञ माता बन गयी। फिर बनी जगत माता, तो हमें भी ऐसा बनना चाहिए।

16- ब्राह्मण कुल की मर्यादा क्या है, वो मम्मा के जीवन से पता चल जाता था। कभी मम्मा को आवाज़ से बात करते नहीं देखा। जितना मीठा बाबा उतनी मीठी मम्मा। कोई लोभ नहीं, कोई मोह नहीं, सिम्पल रहने में सैम्पुल थी माँ। कभी मम्मा खाने पर बात नहीं करेगी, एक दाना बचायेगी नहीं।

17- मम्मा स्ट्रिक नहीं पर गम्भीर, सयानी, नम्रता, सत्यता से भरपूर थी, इसलिए कुछ भी होता एक सेकण्ड में ठीक है कहती तो सब ठीक हो जाता। यह सब देख हमें भी उन दिनों याद में ही रहना आता था और कोई बात करने का अक्ल ही नहीं था।

18- मम्मा समान सच्चाई और नम्रता, धैर्यता और गंभीरता का बल अन्दर में जमा हो तो सेकण्ड में सबके लिए प्युअर फीलिंग क्रियेट कर सबके लिए गुड विशश दे सकेंगे। सबका भला हो इस भावना से सभी की केयर करने की नेचर हो, ऐसी मीनिंगफुल लाइफ हो तो अनेकों को इन्स्पायर करने के लिए बाबा के बहुत अच्छे मम्मा समान इन्स्ट्रुवमेन्ट बन सकते हैं।

19- जैसे मेरे बाबा मम्मा निराकारी स्थिति में रहे हैं, देह, सम्बन्ध से तो न्यारे हैं ही पर हम बच्चों को भी सेकेण्ड में अशरीरी बना देते। मम्मा का हाथ कभी हाथ में लो तो अशरीरीपन की करेन्ट आ जाती थी। ऐसी हमारी भी स्थिति हो।

20- मम्मा की लाइफ ने हमको लाइट बनाया है। मम्मा पूछने पर भी शिक्षा नहीं देगी, मम्मा की शिक्षा सुनना सहज नहीं था। मम्मा की धारणा अन्दर से ऐसी थी। सवेरे से रात तक मम्मा की दिनचर्या ऐसी थी, जो देखकर सब सीखें। बाबा मम्मा को देखा, कितना खाते कैसे खाते हैं। यज्ञ का भोजन है, आहार, विचार और व्यवहार, भले दाल रोटी खाओ या सूखी रोटी भी खाओ, प्यार से खाओ और खिलाओ।

21- बाबा ने जो सिखाया उसे मम्मा ने प्रैक्टिकल रूप में दिखाया और किसी को भी नहीं देखा। तो हर एक देखे कि मैंने लाइफ में औरों को कितना टाइम देखा है! अपने को और बाबा को कितना टाइम देखा है? सच्चा सच्चा चार्ट हर एक अपना देखे। कई बाबा के बच्चों ने औरों को देखने में बहुत टाइम गंवाया है, खुद को और बाबा को देखने में टाइम नहीं दिया है। यह है गफलत। अब इस गफलत को छोड़ मम्मा बाबा समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की रेस करो, यही तीव्र पुरुषार्थ है।

मम्मा की विशेषताये प्रश्न-उत्तर में (दादी कमलमणि)

प्रश्नः- मम्मा कुमारी होते हुए भी माँ के रूप में सब बच्चों की पालना कैसे करती थी?

उत्तरः- बाबा ने मम्मा को जब ''मम्मा'' कहा, उस समय से ही माँ के संस्कार – प्यार देने के, समदृष्टि से देखने के, प्यार से शिक्षा देने के... स्वतः ही इमर्ज होने लगे। 2- मम्मा ने अपनी प्रैक्टिकल जीवन की धारणाओं से पालना की, कहकरके नहीं।

प्रश्नः- मम्मा का बाबा से कैसा सम्बन्ध रहा?

उत्तरः- मम्मा बाबा को सदा कम्बाइन्ड रूप से देखती थी। ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा (बापदादा) दोनों कम्बाइन्ड हैं, यही भाव सदा मम्मा के दिल में रहता, इसलिए बाबा के प्रति बहुत रिस्पेक्ट था। बाबा में सम्पूर्ण निश्चय और दृढ़ता के कारण मम्मा की स्थिति सदा अचल अडोल रही। मम्मा सदा आज्ञाकारी, वफादार, फरमानवरदार बेटी होकर रही। जितना बाबा से प्यार उतना ही बाबा की मुरली से मम्मा को प्यार था।

प्रश्नः- मम्मा ने कौन सा ऐसा गुप्त पुरुषार्थ किया जो सभी बहनों से आगे बढ़ती रही?

उत्तरः- मम्मा रोज़ सवेरे दो बजे उठ जाती थी, बाबा की प्लेन याद में एकान्त में बैठती थी, विचार सागर मंथन कर क्लास में मुरली चलाती, यह मम्मा का हर रोज़ का नियम था। कभी एक दिन भी मम्मा ने यह नियम मिस नहीं किया।

प्रश्नः- यज्ञ में कैसी भी परिस्थिति आई, मम्मा की स्थिति सदा एकरस रही, कभी चेहरे पर फिकरात के चिन्ह नहीं दिखाई दिये, इसके लिए मम्मा ने विशेष कौन सा पुरुषार्थ किया?

उत्तर:- मम्मा का ड्रामा पर सम्पूर्ण और अटल निश्चय था। जो कल्प पहले हुआ था वही अब हो रहा है, इसलिए मम्मा सदा बेफिकर रही। बाबा का यज्ञ है, स्थापना होनी ही है – इस दृढ़ निश्चय के कारण मम्मा सदा मुस्कराती रहती, मम्मा के चेहरे पर कभी चिंता की रेखायें नहीं देखी।

प्रश्न:- मम्मा की मुरली में क्या विशेषता थी जो सभी को सहज, सरल समझ में आती थी?

उत्तर:- बाबा की मुरली को गहराई से समझकर मंथन करके, एक ही प्वाइंट को स्पष्ट करती थी इसलिए सहज ही सबको समझ में आ जाती थी।

प्रश्न:- मम्मा ने चारों ही सबजेक्ट का बैलेन्स कैसे रखा? इसके लिए क्या विशेष पुरुषार्थ किया?

उत्तर:- मम्मा हमेशा कहती - मैं गॉडली स्टूडेन्ट हूँ, इसलिए पढ़ाई पर विशेष ध्यान था। पढ़ाई के साथ एकान्तप्रिय होने कारण योग के गहरे अनुभव करती थी। मम्मा का बाबा से दिल का प्यार था इसलिए बाबा ने जो कहा मम्मा ने उसे अपने जीवन में धारण किया और धारणामूर्त बन गई। मम्मा की जीवन से ही सेवा होती थी। मम्मा कभी कहकरके नहीं सिखाती थी, मम्मा की जीवन से सभी स्वतः सीख लेते थे इसलिए चारों सबजेक्ट में नम्बरवन चली गई।

प्रश्न:- मम्मा में गुण तो बहुत थे परन्तु गम्भीरता का गुण विशेष था जो प्रैक्टिकल जीवन से कैसे दिखाई पड़ता था?

उत्तर:- मम्मा किसी की कमी कमजोरी को देखते व जानते हुए उसे मन में नहीं रखती थी। कोई की कमियों को जानते भी समा लेती थी, कभी इधर उधर वर्णन नहीं करती थी। मम्मा सबकी बातों को सुनकर गम्भीरमूर्त रहती और प्रैक्टिकल मिसाल देकर समझाती कि जैसे कभी किसको उल्टी आती है तो जहाँ नाला हो या नल हो वहाँ उल्टी कर पानी डाल देते हैं, ताकि गंदगी न फैले। ऐसे हमें भी किसकी उल्टी बातों को फैलाना नहीं है, निमित्त स्थान पर ही सुनाना है।